अध्याय 9: आदमी का अनुपात

विषय-सूची — 7 प्रश्नावली · 20 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1	मेरी समझ से	4 प्रश्न
प्रश्नावली 9.2	पंक्तियों पर चर्चा	3 प्रश्न
प्रश्नावली 9.3	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.4	सोच-विचार के लिए	5 प्रश्न
प्रश्नावली 9.5	कविता का सौंदर्य	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.6	विशेषण और विशेष्य	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.7	संख्यातीत शंख — गणितीय प्रश्न	5 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

कविता के अनुसार ब्रह्मांड में मानव का स्थान कैसा है? (क) पृथ्वी पर सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण (ख) ब्रह्मांड की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म (ग) सूर्य, चंद्र आदि सभी नक्षत्रों से बड़ा (घ) समस्त प्रकृति पर शासन करने वाला

हल

कविता में कवि गिरिजाकुमार माथुर ने 'कमरे से घर, घर से मोहल्ला, मोहल्ले से नगर, नगर से देश, देश से पृथ्वी, पृथ्वी से ब्रह्मांड' — इस क्रम से विस्तार दिखाया है।
अंत में स्पष्ट होता है कि मनुष्य तो केवल एक कमरे में समाने वाला प्राणी है, जबकि ब्रह्मांड में अनगिनत नक्षत्र और असीमित विस्तार है।
'यह है अनुपात / आदमी का विराट से' — इस पंक्ति से कवि बताते हैं कि ब्रह्मांड की विशालता के सामने मनुष्य का अस्तित्व अत्यंत सूक्ष्म है।
अतः सही उत्तर है: (ख) ब्रह्मांड की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म।

उत्तर: (ख) ब्रह्मांड की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म

प्रश्न 2

कविता में मुख्य रूप से किन दो वस्तुओं के अनुपात को दिखाया गया है? (क) पृथ्वी और सूर्य (ख) देश और नगर (ग) घर और कमरा (घ) मानव और ब्रह्मांड

हल

कविता का शीर्षक ही 'आदमी का अनुपात' है और अंतिम पंक्तियाँ हैं — 'यह है अनुपात / आदमी का विराट से'।
'विराट' यहाँ ब्रह्मांड की असीमित विशालता का प्रतीक है और 'आदमी' उस विशाल संसार में एक कमरे में रहने वाला सूक्ष्म प्राणी।

पृथ्वी, देश, नगर, घर, कमरा — ये सब केवल उस अनुपात को स्पष्ट करने की सीढ़ियाँ हैं।
अतः सही उत्तर है: (घ) मानव और ब्रह्मांड।

उत्तर: (घ) मानव और ब्रह्मांड

प्रश्न 3

कविता के अनुसार मानव किन भावों और कार्यों में लिप्त रहता है? (क) त्याग, ज्ञान और प्रेम में (ख) सेवा और परोपकार में (ग) ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में (घ) उदारता, धर्म और न्याय में

हल

कविता में कवि ने लिखा है — 'ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा, अविश्वास लीन / संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है'।
कवि यह बताते हैं कि मनुष्य अपनी इन नकारात्मक भावनाओं में डूबा रहता है और इनके कारण अनगिनत दीवारें (भेदभाव, अलगाव) खड़ी करता चला जाता है।
इस पर भी वह खुद को दूसरे का स्वामी बताने की कोशिश करता है — जो उसके अहंकार को दर्शाता है।
अतः सही उत्तर है: (ग) ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में।

उत्तर: (ग) ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में

प्रश्न 4

कविता के अनुसार मानव का सबसे बड़ा दोष क्या है? (क) वह अपनी सीमाओं और दुर्बलताओं को नहीं समझता। (ख) वह दूसरों पर शासन स्थापित करना चाहता है। (ग) वह प्रकृति के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता। (घ) वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है।

हल

कविता में कवि दिखाते हैं कि ब्रह्मांड की तुलना में मनुष्य अत्यंत छोटा है, फिर भी वह 'अपने को दूजे का स्वामी बताता है' और 'एक कमरे में दो दुनियां रचाता है'।
यह अहंकार ही उसका सबसे बड़ा दोष है — वह भूल जाता है कि वह ब्रह्मांड की अनंत विशालता के सामने कितना नन्हा है।
पंक्ति 'इस पर भी आदमी / ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा, अविश्वास लीन' यही संकेत करती है।
विकल्प (ख) भी सही भाव है किंतु (घ) में 'छोटेपन को भूल अहंकारी होना' ही कविता का मूल संदेश है।
अतः सही उत्तर है: (घ) वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है।

उत्तर: (घ) वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है

प्रश्नावली 9.2 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए — (क) "अनगिन नक्षत्रों में / पृथ्वी एक छोटी / करोड़ों में एक ही।"

हल

इन पंक्तियों में कवि ब्रह्मांड की विशालता और पृथ्वी की नगण्यता को उजागर करते हैं।
ब्रह्मांड में असंख्य नक्षत्र (तारे, ग्रह, आकाशगंगाएँ) हैं; उनमें से पृथ्वी केवल एक छोटा-सा ग्रह है।
करोड़ों तारों में एक — यह अनुपात बताता है कि पृथ्वी कितनी अल्प और विलक्षण है।
इसका आशय यह भी है कि जब पृथ्वी ही इतनी छोटी है, तो उस पर रहने वाला मनुष्य और भी सूक्ष्म है।
भाव: इस पंक्ति में कवि पाठक को विनम्रता और विशालता का बोध कराते हैं।

उत्तर: ब्रह्मांड में असंख्य नक्षत्रों के बीच पृथ्वी अत्यंत छोटी है — यह पंक्ति मनुष्य को उसकी सूक्ष्मता और विनम्रता का बोध कराती है।

प्रश्न 2

निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए — (ख) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है / अपने को दूजे का स्वामी बताता है।"

हल

इन पंक्तियों में कवि मनुष्य की दो विरोधाभासी प्रवृत्तियों को उजागर करते हैं।
एक ओर, मनुष्य अनगिनत (संख्यातीत) दीवारें उठाता है — ये दीवारें भौतिक नहीं, बल्कि ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास की दीवारें हैं।
दूसरी ओर, वही मनुष्य दूसरों पर शासन करने की महत्त्वाकांक्षा रखता है — 'अपने को दूजे का स्वामी बताता है।'
'शंख' एक बहुत बड़ी संख्या है (10^17), इससे कवि बताना चाहते हैं कि मनुष्य अनगिनत भेद और विभाजन करता है।
भाव: यह व्यंग्य है — जो ब्रह्मांड में एक कमरे जितना भी नहीं, वही दूसरों को अपना अधीन बनाना चाहता है।

उत्तर: मनुष्य ईर्ष्या-अहंकार की अनगिनत दीवारें खड़ी करता है और दूसरों पर स्वामित्व जताता है — यह कवि का तीखा व्यंग्य है।

प्रश्न 3

निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए — (ग) "देशों की कौन कहे / एक कमरे में / दो दुनियां रचाता है।"

हल

इन पंक्तियों में कवि मनुष्य के अलगाव और विभाजन की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हैं।
'देशों की कौन कहे' — यानी बड़े-बड़े देशों के बीच जो दीवारें हैं, वे तो समझ में भी आती हैं, किंतु अजीब यह है

कि...
एक ही छोटे से कमरे में रहने वाले दो व्यक्ति भी दो अलग-अलग दुनियाएँ बना लेते हैं।
यह पंक्ति मनुष्य के स्वभाव की विडंबना दर्शाती है — जहाँ एकता होनी चाहिए, वहाँ भी अलगाव होता है।
भाव: मनुष्य की भेद करने की प्रवृत्ति इतनी प्रबल है कि वह एक ही छत के नीचे भी एकमत नहीं हो पाता।

उत्तर: एक ही कमरे में दो व्यक्ति भी अपनी-अपनी अलग दुनियाएँ बना लेते हैं — यह मनुष्य की अलगाव की प्रवृत्ति पर व्यंग्य है।

प्रश्नावली 9.3 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

नीचे दो स्तंभ दिए गए हैं। अपने समूह में चर्चा करके स्तंभ 1 की पंक्तियों का मिलान स्तंभ 2 में दिए गए सही अर्थ से कीजिए। स्तंभ 1: 1. संख्यातीत शंख सी दीवारें 2. पृथ्वी एक छोटी, करोड़ों में एक 3. ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा 4. दो व्यक्ति कमरे में / कमरे से छोटे 5. परिधि नभ गंगा की 6. एक कमरे में दो दुनियां रचाता स्तंभ 2: 1. ब्रह्मांड की विशालता का प्रतीक 2. आदमी के संकुचित होने का प्रतीक 3. मनुष्य द्वारा खींची गई कृत्रिम सीमाएं 4. सीमित स्थान में भी और अलगाव की प्रवृत्ति 5. पृथ्वी की अल्पता और अनोखेपन की ओर संकेत 6. मनुष्य की नकारात्मक भावनाएं

हल

1 → 3: 'संख्यातीत शंख सी दीवारें' — मनुष्य ईर्ष्या, अहं आदि के कारण अनगिनत विभाजन करता है, ये सब कृत्रिम (मनुष्य-निर्मित) सीमाएं हैं।

2 → 5: 'पृथ्वी एक छोटी, करोड़ों में एक' — ब्रह्मांड के असंख्य नक्षत्रों में पृथ्वी बेहद छोटी किंतु अनोखी है; यह उसकी अल्पता और अनोखेपन की ओर संकेत करता है।

3 → 6: 'ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा' — ये सब मनुष्य की नकारात्मक भावनाएं हैं जो उसे संकुचित बनाती हैं।

4 → 2: 'दो व्यक्ति कमरे में / कमरे से छोटे' — यह आदमी के संकुचित (अहंकारी और बंद मानसिकता वाले) होने का प्रतीक है।

5 → 1: 'परिधि नभ गंगा की' — आकाशगंगा ब्रह्मांड की विशालता का प्रतीक है; 'सबको समेटे है / परिधि नभ गंगा की'।

6 → 4: 'एक कमरे में दो दुनियां रचाता' — एक ही सीमित स्थान में भी मनुष्य अलगाव की दुनियाएं बनाता है।

उत्तर: 1→3, 2→5, 3→6, 4→2, 5→1, 6→4

प्रश्नावली 9.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

कविता के अनुसार मानव किन कारणों से स्वयं को सीमाओं में बाँधता चला जाता है?

हल

कविता के अनुसार मानव मुख्यतः अपनी नकारात्मक भावनाओं के कारण सीमाओं में बँधता है:
ईर्ष्या — दूसरे की उन्नति न देख पाने की प्रवृत्ति।
अहं — अपने को श्रेष्ठ समझने का भाव।
स्वार्थ — केवल अपने हित की सोचना।
घृणा — दूसरों से नफ़रत करना।
अविश्वास — दूसरों पर भरोसा न करना।
इन्हीं भावनाओं के कारण वह 'संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है' — अर्थात् जाति, धर्म, देश, भाषा आदि के नाम पर असंख्य भेद करता है और खुद को और संकुचित करता जाता है।

उत्तर: ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास — ये नकारात्मक भावनाएं ही मनुष्य को सीमाओं में बाँधती हैं।

प्रश्न 2

यदि आपको इस कविता की एक पंक्ति को दीवार पर लिखना हो, जो आपको प्रतिदिन प्रेरित करे तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों?

हल

पंक्ति का चुनाव: 'यह है अनुपात / आदमी का विराट से।'
यह पंक्ति एक सरल किंतु गहरे अर्थ वाला स्मरण है — मनुष्य ब्रह्मांड की तुलना में कितना छोटा है।
प्रतिदिन यह याद दिलाने से अहंकार कम होता है और विनम्रता बढ़ती है।
जब हम अहंकारी होकर दूसरों को नीचा दिखाने लगें या विभाजन करें, तब यह पंक्ति याद दिलाती है कि हम स्वयं कितने सूक्ष्म हैं।
नोट: अन्य उत्तर भी स्वीकार्य हैं — उदाहरण: 'देशों की कौन कहे / एक कमरे में / दो दुनियां रचाता है' — यदि विद्यार्थी एकता की प्रेरणा चाहते हों।

उत्तर: 'यह है अनुपात / आदमी का विराट से' — यह पंक्ति अहंकार छोड़ने और विनम्र रहने की प्रतिदिन प्रेरणा देती है।

प्रश्न 3

कवि ने मानव की सीमाओं और कमियों की ओर ध्यान दिलाया है, लेकिन कहीं भी क्रोध नहीं दिखाया। आपको इस कविता का भाव कैसा लगा — व्यंग्य, करुणा, चिंता या कुछ और? क्यों?

हल

कविता का मुख्य भाव व्यंग्य (satire) है, जिसमें करुणा का स्वर भी मिला हुआ है।
व्यंग्य: कवि बिना आवाज़ उठाए बताते हैं कि जो प्राणी ब्रह्मांड में एक कमरे जितनी भी जगह नहीं रखता, वही 'दूजे का स्वामी' बनने का नाटक करता है — इसमें व्यंग्य स्पष्ट है।
करुणा: कवि मनुष्य से नाराज़ नहीं, बल्कि उसकी भूल पर दुखी हैं — यह करुणा का भाव है।
चिंता: मानवता के विकास की चिंता भी है — यदि मनुष्य अपनी सूक्ष्मता पहचाने, तो ये दीवारें टूट सकती हैं।
कुल मिलाकर: कविता एक शांत, सोचने पर विवश करने वाला व्यंग्य है — न कोसना, न क्रोध, बस दर्पण दिखाना।

उत्तर: कविता का भाव शांत व्यंग्य और करुणा का मेल है — कवि मनुष्य को कोसते नहीं, बल्कि उसकी सूक्ष्मता और अहंकार का विरोधाभास दर्शाकर सोचने पर विवश करते हैं।

प्रश्न 4

आपके अनुसार 'दीवारें उठाना' के वल ईंट-पत्थर से जुड़ा काम है या कुछ और भी हो सकता है? अपने विचारानुसार समझाइए।

हल

'दीवारें उठाना' एक मुहावरे की तरह प्रयुक्त हुआ है — यह केवल ईंट-पत्थर की दीवार नहीं है।
इसका अर्थ है मनुष्य द्वारा खड़े किए गए अदृश्य विभाजन जैसे—
जाति, धर्म, भाषा, रंग, क्षेत्र के नाम पर भेदभाव।
मन में दूसरों के प्रति ईर्ष्या और अविश्वास।
परिवार में भी अहं के कारण संवाद टूटना।
देशों के बीच शत्रुता और युद्ध।
ये सब 'दीवारें' मनुष्य के मन और समाज में हैं — इनसे न तो रोशनी आती है, न हवा; बस अलगाव और अंधकार।

उत्तर: 'दीवारें उठाना' अदृश्य मानसिक और सामाजिक विभाजन का प्रतीक है — जाति, धर्म, ईर्ष्या और अहंकार की दीवारें जो मनुष्य खुद खड़ी करता है।

प्रश्न 5

मानवता के विकास में सहयोग, समर्पण और सहिष्णुता जैसी सकारात्मक प्रवृत्तियां ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ और घृणा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से कहीं अधिक प्रभावी हैं। उदाहरण देकर बताइए कि सहिष्णुता या सहयोग के कारण समाज में कैसे परिवर्तन आए हैं?

हल

सकारात्मक प्रवृत्तियाँ मानव को विस्तार देती हैं, जबकि नकारात्मक प्रवृत्तियाँ उसे सीमित करती हैं।
उदाहरण 1 — सहयोग: स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न जाति, धर्म और क्षेत्र के लोग एकजुट हुए। उनके सहयोग से भारत स्वतंत्र हुआ।
उदाहरण 2 — सहिष्णुता: महात्मा गांधी ने अहिंसा और सहिष्णुता का मार्ग अपनाया। इससे न केवल भारत, बल्कि विश्व में भी शांतिपूर्ण परिवर्तन की प्रेरणा मिली।
उदाहरण 3 — समर्पण: माँ टेरेसा ने बिना किसी भेदभाव के जरूरतमंदों की सेवा की। उनकी सेवा-भावना ने लाखों

लोगों की जिंदगी बदल दी।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि जब मनुष्य सकारात्मक भावनाओं को अपनाता है तो वह उस 'विराट' की ओर बढ़ता है जिसकी कवि कल्पना करते हैं।

उत्तर: सहयोग, समर्पण और सहिष्णुता ने स्वतंत्रता आंदोलन, गांधी जी की अहिंसा और सेवा कार्यों जैसे उदाहरणों से समाज में बड़े बदलाव लाए हैं।

प्रश्नावली 9.5 — कविता का सौंदर्य

प्रश्न 1

नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएं और वे पंक्तियां दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएं झलकती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए— कविता की विशेषताएं: 1. सरल वाक्य के शब्दों को विशेष क्रम में लगाया गया है। 2. मुहावरे का प्रयोग किया गया है। 3. छोटे से बड़े की ओर विस्तार देने के लिए शब्दों को दोहराया गया है। 4. प्रश्न शैली में व्यंग्य किया गया है। 5. अतिशयोक्ति से भरा कथन है (बढ़ा-चढ़ाकर कहना)। 6. मानव के अहंकार पर तीखा व्यंग्य किया गया है। कविता की पंक्तियाँ: 1. संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है 2. कमरा है घर में, घर है मोहल्ले में, मोहल्ला नगर में... 3. देशों की कौन कहे, एक कमरे में दो दुनियां रचाता है 4. कमरा है घर में 5. यह है अनुपात आदमी का विराट से 6. अपने को दूजे का स्वामी बताता है

हल

1 → 4: 'कमरा है घर में' — साधारण वाक्य 'घर में कमरा है' को पलटकर 'कमरा है घर में' किया गया है — यह शब्दों का विशेष (काव्य) क्रम है।

2 → 1: 'संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है' — 'दीवारें उठाना' मुहावरे की तरह प्रयुक्त है, जिसका अर्थ है विभाजन और अलगाव पैदा करना।

3 → 2: 'कमरा है घर में, घर है मोहल्ले में, मोहल्ला नगर में...' — यहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति से छोटे से बड़े की ओर विस्तार दिखाया गया है।

4 → 3: 'देशों की कौन कहे, एक कमरे में दो दुनियां रचाता है' — यह प्रश्न शैली में व्यंग्य है; 'देशों की कौन कहे' — एक व्यंग्यात्मक प्रश्न।

5 → 5: 'यह है अनुपात आदमी का विराट से' — विशाल ब्रह्मांड (विराट) से आदमी का तुलनात्मक अनुपात — यह अतिशयोक्ति है (मनुष्य को अत्यंत सूक्ष्म बताकर बढ़ा-चढ़ाकर कहना)।

6 → 6: 'अपने को दूजे का स्वामी बताता है' — इतने छोटे मनुष्य का दूसरों पर शासन जताना — यह अहंकार पर सीधा तीखा व्यंग्य है।

उत्तर: 1→4, 2→1, 3→2, 4→3, 5→5, 6→6

प्रश्नावली 9.6 — विशेषण और विशेष्य

प्रश्न 1

अब आप नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों को पहचानकर लिखिए — पंक्ति | विशेषण | विशेष्य 1. दो व्यक्ति कमरे में | (उदाहरण: दो) | (उदाहरण: व्यक्ति) 2. अनगिन नक्षत्रों में | ___ | ___ 3. लाखों ब्रह्मांडों में | ___ | ___ 4. अपना एक ब्रह्मांड | ___ | ___ 5. संख्यातीत शंख सी | ___ | ___ 6. एक कमरे में | ___ | ___ 7. दो दुनियां रचाता है | ___ | ___

हल

विशेषण वह शब्द है जो संज्ञा की विशेषता बताता है; विशेष्य वह संज्ञा है जिसकी विशेषता बताई जा रही है।

1. दो व्यक्ति कमरे में — विशेषण: दो | विशेष्य: व्यक्ति (यह उदाहरण के रूप में दिया गया है)।
2. अनगिन नक्षत्रों में — विशेषण: अनगिन | विशेष्य: नक्षत्रों।
3. लाखों ब्रह्मांडों में — विशेषण: लाखों | विशेष्य: ब्रह्मांडों।
4. अपना एक ब्रह्मांड — विशेषण: एक (और 'अपना' भी सर्वनामिक विशेषण है) | विशेष्य: ब्रह्मांड।
5. संख्यातीत शंख सी — विशेषण: संख्यातीत (शंख सी = उपमा विशेषण) | विशेष्य: दीवारें (संदर्भ से — 'संख्यातीत शंख सी दीवारें')।
6. एक कमरे में — विशेषण: एक | विशेष्य: कमरे।
7. दो दुनियां रचाता है — विशेषण: दो | विशेष्य: दुनियां।

उत्तर: 1. दो/व्यक्ति; 2. अनगिन/नक्षत्रों; 3. लाखों/ब्रह्मांडों; 4. एक/ब्रह्मांड; 5. संख्यातीत/दीवारें; 6. एक/कमरे; 7. दो/दुनियां

प्रश्नावली 9.7 — संख्यातीत शंख — गणितीय प्रश्न

प्रश्न 1

तालिका के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर खोजिए — 1. जिस संख्या में 15 शून्य होते हैं, उसे क्या कहते हैं?

हल

तालिका के अनुसार संख्याएँ और उनकी गणितीय शक्ति—
नील = 1,00,00,00,00,00,000 = 10^13 (13 शून्य)
दस नील = 10^14 (14 शून्य)
पद्म = 10^15 (15 शून्य)
15 शून्य वाली संख्या = 1,00,00,00,00,00,00,000 = 10^15
तालिका के अनुसार 10^15 को 'पद्म' कहते हैं।

उत्तर: जिस संख्या में 15 शून्य होते हैं, उसे 'पद्म' कहते हैं।

प्रश्न 2

तालिका के आधार पर — महाशंख में कितने शून्य होते हैं?

हल

तालिका के अनुसार: महाशंख = 1,00,00,00,00,00,00,00,00,000 = 10^19।
10^19 में 10 के बाद 19 शून्य होते हैं।
अतः महाशंख में 19 शून्य होते हैं।

उत्तर: महाशंख में 19 शून्य होते हैं।

प्रश्न 3

तालिका के आधार पर — एक लाख में कितने हजार होते हैं?

हल

एक लाख = 1,00,000 = 10^5।
एक हजार = 1,000 = 10^3।
गणना: 1,00,000 ÷ 1,000 = 100।
अतः एक लाख में 100 हजार होते हैं।

उत्तर: एक लाख में 100 हजार होते हैं।

प्रश्न 4

तालिका के आधार पर — उपर्युक्त तालिका के अनुसार सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या कौन-सी है?

हल

तालिका में दी गई संख्याओं का क्रम 1 (एक/इकाई, 10^0) से महाशंख (10^19) तक है।
सबसे छोटी संख्या: एक (इकाई) = 1 = 10^0।
सबसे बड़ी संख्या: महाशंख = 1,00,00,00,00,00,00,00,00,000 = 10^19।

उत्तर: सबसे छोटी संख्या: एक (1), सबसे बड़ी संख्या: महाशंख (10^19 = 1,00,00,00,00,00,00,00,00,000)।

प्रश्न 5

तालिका के आधार पर — दस करोड़ और एक अरब को जोड़ने पर कौन-सी संख्या आएगी?

हल

दस करोड़ = 10,00,00,000 = 10^8।
एक अरब = 1,00,00,00,000 = 10^9।
योग: 10,00,00,000 + 1,00,00,00,000 = 1,10,00,00,000।
अर्थात् 110 करोड़ = 1 अरब 10 करोड़।
यह संख्या तालिका में 'अरब' (10^9) और 'दस अरब' (10^10) के बीच की है — इसे '1 अरब 10 करोड़' कहेंगे।

उत्तर: दस करोड़ + एक अरब = 1,10,00,00,000 (एक अरब दस करोड़)।